अलंकार ग्रंथ

शिवराजभूषण

(भूषणकविकृत)

संग्रहकर्ता

परमानन्द सुहाने

लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

सन् १९२१ ई०

तीसरीबार

कवि का परिचय।

इस शिवराजभूषण ग्रन्थ से विदित होता है कि भूषण कवि के पिता का नाम रत्नाकर था और कश्यप गोत्री कनौजिया ब्राह्मण यमुनानदी के किनारे त्रिविक्रमपुर (सांप्रत टिकमापुर) ज़िला कानपुर के निवासी थे और भी अनेक ग्रन्थों से मालूम होता है कि इनके पिता नित्य देवीजी के स्थान पर दुर्गापाठ करने जाते थे (देवीजी का स्थान इनके गांवसे एक मील के अन्तर पर था) एक दिन श्री भगवती प्रसन्न होकर चार भक्तों के मुण्ड दिखाकर बोलीं यही चारों तेरे पुत्र होवेंगे निदान ऐसाही हुआ कि, चिन्तामणि, भूषण, मतिराम और जटाशंकर उपनाम नीलकण्ठ ये चार पुत्र उत्पन्न हुये इनमें केवल नीलकण्ठ महाराज तो एक सिद्ध के आशीर्वाद से कविहुये शेष तीनों भाई संस्कृत काव्य को पढ़ ऐसे पंडित हुये कि इनका नाम प्रलयतक बना रहेगा इन्हीं के वंश में शीतल और बिहारीलाल कवि जिनका लालभोग है संवत् १६०१ तक विद्यमान थे। इन चारों भाइयों का जन्म समय किसी ग्रन्थ से ठीक ठीक निश्चय नहीं होता इससे मैंने यहां नहीं लिखा ॥

भूषणकवि प्रथम राजा छत्रशाल पन्नानरेश के यहां छः महीने तक रहे तिस पीछे महाराज शिवाजी सुलंकी सितारे गढ़वाले के यहां जाय बड़ा मानपाया और अपनी काव्य माधुर्यता से उस महाराज का मन रंजन कर जब यह कवित्त पढ़ा (इन्द्र जिमि जंभ पर बाड़व सुअंभपर रावण सुदंभ पर रघुकुल राज हैं। पौन बारिबाह पर शंभु रतिनाह पर त्यों सहस्त्रबाह पर रामद्विजराज हैं॥ दावा द्रुम दुंडपर चित्ता मृग झुंडपर भूषण वितुंड पर जैसे मृगराज हैं। तेजतिमि रंसपर कान्ह जिमि कंसपर त्यों मलेच्छबंस पर शेर शिवराज हैं) इसके सुनतेही शिवराज ने पांच हाथी और पच्चीस हज़ार रुपया ईनाम दिया, इसप्रकार से भूषण जी ने बहुत बार द्रव्य हाथी घोड़े पालकी आदि दान में पाये इन्होंने ऐसे ऐसे शिवराज के कवित्त बनाये कि जिनकी बराबर किसी कवि ने वीर यश नहीं बना पाया। जैसे इनकी काव्य में रौद्र, वीर, भयानक, उपमा, अर्थ गौरव, पदलालित्य और अलंकार का आदर्श होता है वैसे और कवि लोगों की काव्य में नहीं पाया जाता, न कवि की वीर रस पूरित ऐसी कविता है कि जिसको बांचने से नपुंसक को भी शूरत्व आये विना नहीं रहता ऐसे प्रतापी कवि के कवित्त की बराबरी आजतक भाषा काव्य में किसी कवि ने नहीं की निदान जब भूषणजी अपने घर को लौटे तब पन्ना आकर राजा छत्रशाल से

मिले। राजा छत्रशाल ने विचारा कि अब तो शिवराज ने इनको ऐसा धन धान्य दिया है कि हम उसका दशवां भाग भी नहीं देसकते ऐसा सोचकर चलते समय भूषणजी की पालकी का बांस अपने कंधेपर धर लिया। ब्राह्मण कोमल हृदय तो होतेहीहैं भूषणजी बहुत प्रसन्न हो यह कवित्त पढ़ा (राजत अखण्ड तेज छाजत सुयश बड़ो गाजत गयन्द दिग्गजनि हिये शालको। जाहि के प्रताप सों मलीन आफताब होत ताप तजि दुर्जन करत बहुख्यालको॥ साजि सजि गजतुरी कोतल कतार दीन्हे भूषणभनत ऐसो दीन प्रतिपालको। और राजा रावमन एकहू न ल्याऊं अब साहिको सराहौं कि सराहौं छत्रशाल को) और दूसरा यह कवित्त कहा (भुज भुजगेश के वै संगिनी भुजंगिनी सी खेदि खेदि खाती देह दारुण दलन के। बख्तर पाखरानि बीच धँसि जात मीन पैरिपार जात परवाह ज्यों जलन के॥ रैया राव चंपति के छत्रशाल महाराज भूषण सकत को बखानि यों बलन के। पच्छी परछीने ऐसे परे परछीने वीर तेरी बरछीने बरछीने हैं खलन के) और यह दो दोहा बनाय राजा को दे आप घर को आये (इक हाड़ा बूँदी धनी मरद महेवावाल। शालत नौरँगजेब के ये दोनों छत्रशाल १॥ ये देखा छत्ता पता ये देखा छत्रशाल। ये दिल्ली की ढाल ये दिल्ली ढाहनवाल) थोड़े दिन भूषणजी घर में रह फिर बहुत देशान्तरों में घूम घूम रजवाड़ों में शिवराज

का यश प्रकट करते रहे। पश्चात् इन्होंने विचारा कि शिवाजी का यश कमाऊं के पहाड़ तक फैलाहै या नहीं यह देखने के लिये आप कमाऊं में जाय राजा कमाऊं के यश में यह कवित्त पढ़ा (उलदत मद अनुमद ज्यों जलधि जल बलहद भीमकद काहू के न आहके। प्रबल प्रचण्ड गण्ड मण्डित मधुप बृन्द बिन्द से बिलिन्द सिंधु सातहुके थाह के ॥ भूषण भनत झुलि झम्पति झपान झुकी झुकत झुकत झहरात रथ हाल के। मेघ से घमण्डित मजेजदार तेजपुंज गुंजत सो कुंजर कमाऊं नरनाथ के) यह सुन राजा ने सोचा कि कविजी कुछ दान लेना चाहते हैं और हमने जो सुना था कि शिवराज ने इन्हीं को लाखों रुपया दिया है सो सब झूठ है ऐसा विचारकर, हाथी घोड़े और बहुत सा द्रव्य भूषणजी के आगे किया तब भूषणजी ने कहा कि अब इसकी हम को भूख नहीं है हमतो इसलिये यहां आये थे कि देखें शिवराज का यश यहां तक फैला है या नहीं सो उनका यश यहां तक फैला देख हम बहुत प्रसन्न हुये, ऐसा कह राजा से बिदा हो कविराज अपने घरको आये इनके बनाये हुये ये चार ग्रन्थ सुने जाते हैं शिवराज भूषण, भूषण हजारा, भूषण उल्लास, दूषण उल्लास परन्तु इन चार ग्रन्थों में से तीनका तो पताही नहीं लगता चौथा यह "शिवराजभूषण" महान परिश्रम और द्रव्य खर्च से प्राप्त हुआ है इस ग्रन्थ को कवि ने

संवत् १७३० में श्रीमन्महाराज शिवाजी राव सुलंकी सितारे गढ़वाले का वीर यश वर्णन करके रचाथा परन्तु आज २२० वर्ष इस ग्रन्थ को बने होगये लेकिन किसी महाशय ने आजतक इसको प्रकाशित न किया अब मैं सर्व काव्य रसिकों के निमित्त इस ग्रन्थको शुद्धतापूर्वक प्रकाशित कराताहूं और मैं उन महाशयों से क्षमा मांगता हूं कि जो प्राचीन काव्यके न छपवाने में अहर्निश तत्पर रहते हैं और छपी हुई पुस्तक देखकर प्रकाशक को अनेकों दुर्वचन कह उठते हैं ॥

आपका कृपाभिलाषी

संग्रहकर्ता

शिवराजभूषण का सूचीपत्र ॥

इति शिवराजभूषण का सूचीपत्र सम्पूर्णम् ॥



शिवराजभूषण ॥

उपोद्घातछप्पै ॥ जय जयति जय आदि शक्ति जय कालि कपर्दिनि । जय मधुकैटभ छलनि देवि जय महिषबिमर्दिनि ॥ जयचमुण्ड जय चण्ड मुण्ड भण्डासुर खण्डिनि । जय सुरक्त जय रक्तबीज बिड्डाल बिहण्डिनि ॥ जय निशुंभ शुंभदलनि भनि भूषण जयजय भननि । सरजा समर्थ शिवराज कहँ देहिबिजय जयजगजननि १ ॥ दोहा ॥ तरणि जगत जलनिधि तरणि जैजै आनँद ओक । कोक कोक नद शोकहर लोक लोक आलोक २ राजत है दिनराजको बंश अवनि अवतंश । जामें पुनि पुनि अवतरे कंस प्रशंस प्रभु अंश २ महाबीर ता बंशमें भयो

एक अवनीश । लियो विरद सीसौदिया दियो ईशको शीश ४ ता कुलमें नृपवृन्द सब उपजे बखत बुलंद । भूमिपाल तिन में भयो बड़ो माल मकरन्द ५ सदा दान किरवानमें जाके आननअम्भ । साहिनिजाम सखा भयो दुर्ग्ग देव गिरिखम्भ ६ याते सरजा विरदभो शोभित सिंह प्रमान । रनभूसिला सुभौंसिला आयुषमान सुमान ७ भूषण भनि ताके भयो भुव भूषण नृपसाहि । रात्यो दिन शंकित रहैं साहि सबै जगमाहिं ८ ॥ कवित्त ॥ एतेहाथी दियेमाल मकरन्दजूके नन्द जेते गनि सकति विरंचिहू की न तिया । भूषण भनत जाकी साहिबी सभाके देखे लागैं और सब छितिपाल छितिमें छिया ॥ साहस अपार हिंदवानको अधार धीर सकलसिसौदिया सपूत कुलको दिया । जाहिर जहान भयो साहिजू खुमानवीर साहिनको शरण सिपाहिनको तकिया ९ ॥ दोहा ॥ दशरथके जो रामभो श्रीवसुदेव गोपाल । सोईप्रगट्यो साहिके श्री शिवराज भुवाल १० उदित होत शिवराज के मुदित भये द्विजदेव । कलियुग हट्यो मिट्यो सकल म्लेच्छनिको अहमेव ११ ॥ कवित्त ॥

जादिन जन्म लीन्हों भूपर भूसिलाभूप ताही दिन जीत्यो अरिउरके उछाहको । छठी छत्र पतिन को जीत्यो भाग अनायास जीत्यो नाम करन में करन प्रवाहको ॥ भूषण भनत बाल लीलागढ़कोट जीते साहिके शिवाजी करित्यों हूं चक्क चाहको । गोलकुण्डा बीजापुर जीत्यो लरिकाइहिं में जवानी आये जीत्यो दिल्लीपति पादशाहको १२ ॥ दोहा ॥ दक्षिणके सब दुर्ग्गजि ति दुर्गसाह इबिलास । शिवसेवक शिवगढ़पती कियो राजगढ़वास १३ ॥ राजगढ़वर्णन सवैया ॥ जापर साहितनै शिवराज सुरेशकी ऐसी सभा शुभ साजै । यों कवि भूषण जंपति है लखि सं-पतिको अलकापति लाजै ॥ तामधि तीनिहूं लोककी दीपति ऐसो बड़ो गढ़राज बिराजै । वारि पतालसी माचीमही अमरावतिकी छवि ऊपर छाजै १४ ॥ हरिगीतिकाछन्द ॥ मणिमयमहल शिवराजके इमि राजगढ़में राजहीं । लखियक्ष किन्नर सुर असुर गंधर्व हौसनि साजहीं ॥ उ-त्तंग मरकत मंदिरन मधि बहु मृदंग यों बाजहीं । घन समरमानहुं घुमड़िकरि घनघन पटल

मणि लाल छज्जा छाजहीं । संध्या समय मानहुं नखत गन लाल अम्बर राजहीं ॥ जहाँ तहाँ ऊरध उठे हीरा किरण समुदाय है । मानौ गगन तम्बू तन्यो ताके सपेत तनायहै ॥ भूषण भनतजहँ परासिकै मणि पुहुपरागनकी प्रभा। प्रभु पीतपटकी प्रगटपावत सिन्धु मेघनकी सभा ॥ मुख नागरिनके राजहीं कहुँ फटिक महलन संगमैं । लसै अमल कोमल मानहुँ गगन गंग तरंगमैं ॥ आनंद सों सुन्दरिनके कहुँ इन्दु बदन उदोतहै । नभ सरितके प्रफुलित कुमुद कलित कमल कुल होतहै ॥ कहुँ बावली सरकूप राजत बद्धमणि सोपान है । जहँ हंससारस चक्रवाक विहार करत गुमानहै ॥ कितहूं बिशाल प्रवाल जालनि जटित अंगन भूमि है । जहँ ललित बागनि द्रुम लतनि मिलि रहे झिलिमिलि भूमिहै ॥ चंपा चमेली चारु चंदन चारिहूं दिशि देखिये । लवली लवंग इलानि केरे लाखहों लगि लेखिये ॥ कहुँ केतकी कदली करौंदा कुन्द अरु करवीर हैं । कहुँ दाख दाड़िम सेब कटहर तूत अरु जंबीरहैं ॥ कितहूं कदम्ब कदम्ब कहुँ हिंताल ताल तमालहैं ।

पीयूषते मीठे फले कितहूं रसाल रसाल हैं ॥ पुन्नाग कहुँ कहुँ नागकेसरि कितहुं बंकुल अ-शोकहै। कहुँ ललित अगर गुलाब पाटल पटल बेला थोकहै ॥ कितहूं निवारी माधवी शृंगार हार कहूँ लसैं। जहँ भांति भांतिन रंग रंग बि-हंग आनँद सों रसैं १५ ॥ छप्पै ॥ लसत बिहं-गम बहुत बहु भांति बाग महँ। कोकिलकीर कपोत केलि कल कल करंत तहँ॥ मञ्जुलमहरि मयूर चटुल चातक चकोर गन। पियत मधुर मकरंद करत झंकार भृंग घन ॥ भूषण सुबास फलफूलयुत छहुँऋतु बसत बसंतजहँ। इमिराज दुर्ग राजत रुचिर अतिहिसुखदशिवराजकहँ १६

दोहा ॥ तहां राजधानी करी जीतिसकल तुरकान। शिवसरजारुचिदान में कीन्होंसुयश जहान १७

देशनि देशनि ते गुनी आवत याचन ताहि। तिनमें आयो एक कबि भूषण कहियतु जाहि १८

द्विज कनौज कुलकश्यपी रतनाकर सुत धीर। बसत त्रिविक्रमपुर सदा तरणि तनूजा तीर १९

शिवचरित्र लखि यों भयो कवि भूषण के चित्त। भांतिभांति भूषणनिसों भूषितकरौं कबित्त २० सुकबिनहूँकी कृपा कछु समुझि कबिन को पन्थ।

ज्यारी। यों तम तोमहिं चाबिकै चन्द्र चहूँदिशि चांदनि चारु पसारी। ज्यों अफजल्लहि मारि महीपर कीरति श्री शिवराज बगारी ९॥ दोहा॥ जहँ बरणत उपमेयते हीनो करिउपमान। तासों कहै प्रतीपहै भूषण सुकबि सुजान १०॥ उदाहरण सवैया॥ कुन्द कहाँ पयव्न्दकहाँ अरु चन्द्रकहाँ सरजा यश आगे। भूषण भानु कृशानुकहाँ व खुमान प्रताप महीतल पागे॥ रामकहाँ द्विज रामकहाँ बलरामकहाँ रन में अनुरागे। बाजकहाँ मृगराजकहाँ अति साहस में शिवराजके आगे ११ यों शिवराजको राजअडोलकियो शिवजोव कहा ध्रुवधूहै। कामना दानि खुमान लखे न कछू दिव वृक्ष न देवगऊहै। भूषन भूपनमें कुल भूषण भौसिला भूपधरे सबभू है। मेरु कछू न कछू दिगदन्तिन कुण्डलि कोल कछू न कछूहै १२॥ उपमेयोपमावर्णन॥जहां परस्पर होत है उपमेयो उपमान। भूषण उपमेयोपमा ताहि बखानत जान १३॥ उदाहरण कवित्त॥ तेरो तेजसरजा समर्थ दिनकर सोहै दिनकर सोहै तेरे तेजके निकर को। भौसला भुवालतेरो यश हिमकर सोहै हिमकर सोहै तेरे यशके अकरसो॥ भूषण भनत तेरो

हियो रत्नाकर सो रत्नाकरौ है तेरे हिय सुख कर सो। साहिके सपूतशिव साहि दानितेरे करसुर तरु सो है सुरतरु तेरे करसो १४ ॥ मालोपमावर्णन दोहा ॥ जहां एक उपमेयके होत बहुतउपमान। ताहि कहत मालोपमा भूषण सकल सुजान १५॥ उदाहरण कवित्त ॥ इन्द्र जिमि जंभपर बाडव ज्यों अंभपर रावण सुदंभपर रघुकुल राज है। पवन बारिबाहपर शम्भु रतिनाहपर ज्यों सहस्रबाहुँ पर राम द्विजराज है॥ दावा द्रुमदुण्डपर चीता मृगझुण्डपर भूषण बितुण्डपर जैसे मृगराज है। तेज तिमिरंस पर कान्ह जिमि कंसपर त्यों मलेच्छ बंशपर शेर शिवराज है १६ ॥ ललितोपमावर्णन दोहा ॥ जहँ समता को दुहुँन की, लीलादिक पद होत। ताहि कहत ललितोपमा सकल कबिन के गोत १७॥ उदाहरण दोहा ॥ बहसत निदरत हँसत जहँ छबि अनुसरित बखानि। शत्रुमित्र इमि औरऊ लीलादिक पद जानि १८॥ तथा कवित्त ॥ साहितनै सरजा शिवाकी सभा जामधिहै मेरुवारी सुरकी सभाको निदरति है। भूषण भनत जाके एक एक शिखरते केतिक घ्यौन दिनके सोतवे तरति है॥ जोन्ह को हँसति

जोति हीरमनिमन्दिरानि कन्दरनिमैं छबि कुहूकि उघरतिहै। ऐसो ऊँचो दुर्ग महाबली है जा में नखतावली सोव हँसि दिपावली धरतिहै १९॥ रूपकवर्णन दोहा॥ जहाँ दुहुँनको भेद नहिं बरणत सुकबि सुजान। रूपक भूषण ताहिको भूषणकहत प्रमान २०॥ उदाहरण छप्पै॥ कलियुग जलधि अपार उद्ध अधरम्म उर्मिमय। लच्छनिलच्छ मलिच्छ कच्छ अरु मच्छ मगरचय॥ नृपति नदी नद बृन्द होत जाको मिलिनीरस। भनि भूषणसबभुम्मि घेरि किन्निय सुअप्पवस॥ हिन्दवान पुरायगाह कवनिक तासु निबाहक साहि सुव। बरदवान किरवान धरि यश जहाज शिवराजदुव २१ साहिन मनसमरत्थ जासुअव रंग साहि शिरु। हृदै जासु अव्वासुसाहिवहल बिलास थिरु॥ एदल साहि कुतुब्ब जासु भुज युग भूषणभनि। पाइ म्लेच्छ उमराय कायतुरकान और गनि॥ यह रूप अवनि अवतार धरि जिहि जालिम जगदण्डियव। सरजाशिव साहस खर्ग गहि कलियुग सोइ खल खंडियव २२॥ तथा कवित्त॥ सिंह धरिजाने बिन जाव ली जंगल भटी हठी गजएदिल पठाइकरि भटक्यो।

भूषण भनत देखि भभरिभगानो सब हिम्मत हिये में धरिकाहुवै न हटक्यो॥ साहिकें शिवाजी गाजी सरजा समर्थ महामद गल अफजलै पंजा बल पटक्यो। ताबिगरहे करि निकामनिज धामकह आकृत महाउतलै आंकुशलै सटक्यो २३ ॥ रूपकभेदवर्णन दोहा ॥ घटिबढ़ि जहँ वर्णन करै करिकै दुहुँन अभेद। भूषणकवि औरौकहत द्वै रूपकको भेद २४ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ साहितनै शिवराज भूषण सुयश तुव बिगिरकलंक चन्द्र उर आनियतुहै। एकहि आनन पंचआनन ग-नित तोहिं गजानन बदन बिना बखानियतुहै ॥ एक शीशही सहस शीश कलाकरिबेको दुहूँदग सों सहस दग मानियतुहै। दुहूँ करसों सहस कर मानियतु तोहिं दुहूँ बाहुँसों सहसबाहु जानियतु है २५ जेते हैं पहार भुव माहि पारावार तिन सुनिकै अपार कृपा गहै सुख फैल है। भूषण भनत साहि तनै सरजाकेपास आइबे को बढ़ी उर हौसनकी ऐलहै॥ किरवान बज्र सों बिपच्छ करिबेके डर आइ है किते कौं आये शरण कीगैलहै। मघवा मही में आनि शिव है माहि रवान कोटकारि सकल सपच्छकिये शैलहै २६॥

परिणामवर्णन दोहा ॥ जहँ अभेद करि दुहुँन सों करत और से काम । भनि भूषण सब कहत हैं तासुनाम परिणाम २७ ॥ उदाहरण सवैया ॥ भूषण तीषण तेज तरन्नि सो बैरिन को कियो पानिप हीनो । दारिद दौकरि बारिद सौ दलि त्यों धरणीतल शीतल कीनो ॥ भौसिला भूपबली भुवको भुज भारी भुजंगम सों भरुलीनो । साहितनै कुलचन्द शिवा यश चन्द सों चन्द कियो छबि छीनो २८ ॥ उल्लेखवर्णन दोहा ॥ कै बहुतै कै एक जहँ एक बस्तुको देखि । बहु बिधि कर उल्लेखहै सो उल्लेखि उलेखि २६ ॥ उदाहरण सवैया ॥ एकै कहै कल्पद्रुमहै इमि पूरति है सबकी चित चाहै । एकैकहै अवतार मनोज को यों तन में अति सुन्दरताहै ॥ भूषण एकै कहै महि इन्दु यों राज बिराजत बाढ़्यो महाहै । एकै कहै नरसिंहहै संगर एकै कहै नरसिंह शिवा है ३० ॥ तथा कवित्त ॥ पैज प्रतिपाल भूमि भार को हमाल चहूं चक्कको अमाल भयो दण्डत जहान को । साहिन को साल भयो ज्वार को जवाल भयो हरको कृपाल भयो हारके बिधान को ॥ बीर रस ख्याल शिवराज भूवपाल तव

हाथको बिशाल भयो भूषण बखान को। तेरो करवाल भयो दक्षिणको ढाल भयो हिन्द को दिवाल भयो काल तुरकान को ३१ ॥ स्मृतिवर्णन दोहा ॥ सम शोभा लखि आनकी सुधि आवत जेहि ठौर। स्मृति भूषण तासों कहत भूषण कबि शिर मौर ३२ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ तुम शिव राज ब्रजराज अवतार आज तुमहीं जगतकाज पोषत भरतहौ। तुम्हें छांड़ि यातें काहि बिनती सुनाऊं मैं तिहारे गुण गाऊं तू ढील क्यों धरत हौ॥ भूषण भनत वह कुल मैं न भयो न गुनाहक छुड़ायो क्यों न चित्तहि हरतहौ। और ब्राह्मननि देखि करत सुदामा सुधि मोहिं देखि काहे सुधि भृगुकी करतहौ ३३ ॥ भ्रमवर्णन दोहा ॥ आन बात को आनमें होत जहाँ भ्रम आनि। तासों भ्रम सब कहत हैं भूषण कबि मत जानि ३४ ॥ उदाहरण सवैया ॥ पीय पहारनि पास न जाहुँ यों तीय बहादुर सों कह शोषै। कौन बचै है नवाब तुम्हें भनै भूषण भोसिला भूप के रोषै॥ बन्दि कियो इहो साइस्तखां यशवन्त से भाउ करंनं से दोषै। सिंह शिवाजिके बीरन सेगो अमीरनि [illegible]

संदेहवर्णन दोहा ॥ कै यह कै वह यों जहां होत आनि सन्देह। भूषण सो सन्देह है यामें नहिं सन्देह ३६ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ आवत गोसल खाने ऐसे कछू त्योर ठाने जान्यो अवरंगजू के प्राणनको लेवाहै। रसखोट भये एतै अगोट आगरे में साते चौकीना कि आइ घरकीन्हीं हद्द रेवाहै ॥ भूषण भनत यह चहूँ चक्क चाह कियो पातशाह चकताकी छाती महछेवा है। जान्यो न परतु ऐसे काम है करतु कोऊ गन्धर्व देवाहै कै सिद्ध है कि सेवाहै ३७ ॥ अपह्नुतिवर्णन दोहा ॥ आनबात आरोपिये सांची बात दुराइ। शुद्ध अपह्नुति तिहि कहत भूषण सब कबिराइ ३८ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ चमकती चपला न फिरत फिरंगै भट इन्द्रको न चाँप तरु बैरष समाजको। धाये धुरवान छाये धुरके पटल मेघ गाजिबो न बाजिबो है दुंदुभि दुवाजको ॥ भौंसिलाके डरनि डरानी रिपुरानी कहै पियभजो देखि उदो पावसकी साजको। घनकी घटान गजघटनि सनाहसाजै भूषण भनत आयो सेन शिवराजको ३९ ॥ हेत्वपह्नुतिवर्णन दोहा ॥ जहाँ जुगति भौं आनको कहिये आन छपाइ। हेत अपह्नुति कहत है

तासों कबि समुदाइ ४० ॥ उदाहरण दोहा ॥ शिव सरजाके कर लसै सोन होइ किरवान। भुज भुजगेश भुजंगिनी भखति पौन अरि प्रान ४१ ॥ पर्य्यस्तापह्नुतिवर्णन दोहा ॥ बस्तु गोइ ताको धरम आन बस्तु में रोपि। पर्य्यस्तापह्नुति कहत कबि भूषण मति ओपि ४२ ॥ उदाहरण दोहा ॥ काल करत कलिकाल में नहिं तुरकनको काल। काल करत तुरकानको शिव सरजा करबाल ४३ ॥ भ्रांतापह्नुतिवर्णन दोहा ॥ शङ्क आपनी होत ही जहँ भ्रम कीजै दूरि। भ्रांतापह्नुति कहत हैं तेहि भूषण कबिभूरि ४४ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ साहितनै सरजाकी भयसों भगाने भूप मेरुके लुकानेते लहत जाइ ओकहै। भूषण तहाँ ऊमर हट पतिके प्रताप पावत नवल अति कौतुक उदोतहै ॥ शिव आयो शिव आयो शंकर के आगमन सुनिकै परान ज्योंलगत अरिगोत है। शिवसरजान यह शिवहै महेश तब योंकैउपदेश यक्ष रक्षकसे होतहै ४५ ॥ तथा सवैया ॥ एक समय साजिकै सब सैन सिकारको आलमगीर सिधाये। आवतहै सरजा समस्यो एक ओरते गोलनि बोल जताये ॥ [illegible]

भौंसिला रूपकी धाक धुकाये । धाइकै सिंह कह्यो समुझाइकै रौलनि आइ अचेत उठाये ४६॥ छेकापह्नुतिवर्णन दोहा ॥ जहां और की शंक करि सांच छपावत बात । छेकापह्नुति कहत हैं भूषण मति अवदात ४७॥ उदाहरण दोहा ॥ तिमिर बंशहर अरुणकर आयो सजनी भोर । शिव सरजा चुपरहि सखी सूरज सुर शिर मौर ४८ ॥ कैतवापह्नुतिवर्णन दोहा ॥ जहँ कैतव छल ब्याजमिस इनसों होत दुराव । कहत कैतवापह्नुतिहि भूषण कवि सदभाव ४९॥ उदाहरण दोहा ॥ दुर्ग बलयजन प्रबल सर जाजीत्यो रणमाहिं। औरंग कहै दिवानसों सपन सुनावत काहिं ५० सुनि सुउजीरन यों कह्यो सरजा शिव महराज । भूषण कहि चकता सकुचि नाहिं सिकार मृगराज ५१ ॥ तथा कवित्त ॥ साहिनके शिक्षक सिपाहिन के पातशाह संगरमें सिंह कैसे जिनके सुभावहैं। भूषण भनत शिव सरजा कीधाकैते वे कांपत रहत चित्त गहत न चावहैं॥ अफजलकी अगति साइस्तखांकी अपति वह लोलकी बिपति सुनि डरे उमराउहैं। पक्का मतौ करिकै मलेच्छ मन सब छोड़ि मक्काहि के मिसि उतरत दरियाउहैं ५२॥

उत्प्रेक्षावर्णन दोहा ॥ आन बातको आनमें जहँस-म्भावन होइ । वस्तु हेतु फलयुत कहत उत्प्रेक्षा है सोइ ५३ ॥ उदाहरण सवैया ॥ दानव आयो दगा करि जावली दिग्धभयारो महामद भाय्यो । भूषण बाहुबली सरजाहि सुभेटिवेको निरशंक पधाय्यो ॥ बीछूके घायगिरे अफजल्लहि ऊपरही शिवराज निहाय्यो । दाबियों बैठ्यो नरिन्द अ-रिन्दहि मानो मयन्द गयन्द पछाय्यो ५४ साहि तनै शिव साहि निशामें निशाकलियो गढ़ सिंह सुहानो । राठिवरोको संहार भयो भिरिकै सिर-दार गिय्यो उदै भानो ॥ भूषण यों घमसान भो भूतल घेरत लोथनि मानो मुहानो । ऊंचे सु-छज्ज छता उचटी प्रकटी परभा परभात कीं जानो ५५ ॥ तथा कवित्त ॥ दुर्जनदार भाजि भजिवे सम्हार चढ़ी उत्तर पहार डरि शिवाजी नरिन्द ते । भूषण भनत बिन भूषण बसन सबै भूषण पियासवहैं नाहनिके निन्दते ॥ बालक अयानै बाट बीचही बिलानै कुम्हिलानै मुख कोमल अ-मल अरबिन्दते । दृग जल कज्जल कलित बढ़्यो मानो दूजो सोतत तरनि तन जाको क-लिन्दते ५६ ॥ तथा दोहा ॥ महासज शिवसाज

तुव सुधा धवल ध्रुव कित्ति। छबि छटानि सौं छुहतिसी छिति अंगन दिग भित्ति ५७ ॥ तथा कवित्त ॥ लूट्यो खान दौरा जोरावर सफजंग अरु लद्योकार तलबस्वां मनहुँ अमाल है। भूषण भनत लूट्यो पूनामें साइस्तखान गढ़नि में लूट्यो त्यों गढ़ोइनि को जाल है॥ हेरि हेरि कूटि सलहेरि बीच सरदार घेरि घेरि लूट्यो सब कटक कराल है। मानो हय हाथी उमराव करि साथी अवरंग डरि शिवाजी पै भेजत रसालहै ५८ ॥ तथा दोहा ॥ दुवन सदन सब के बदन शिव शिव आठों याम। निज बचिबे को जपत जनु तुरकौ हरकौ नाम ५९ ॥ उत्प्रेक्षागनि गुपति वर्णन दोहा ॥ मानो इत्यादिक बचन आवत नहिं जिहि ठोर। उत्प्रेक्षागनि गुपति सों भूषण भनत अमोर ६० उदाहरण कवित्त ॥ देखत उचाई उदरति पाग सूधी राह धौसहू मैं चढ़ेते जे साहस निकेतहै। शिवाजी हुकुम तेरो पाइ पैदल निसल हेरि परना लेसे जीते जनु खेतहै॥ सावन भादौंकी भारी कुहूकी अँध्यारी चढ़ि दुर्ग पर जात मावला-वल सचेतहै। भूषण भनत ताकी बातमैं बि-चारी तेरे परताब रबिकी उज्यारी गढ़ लेतहै ६१

तथा दोहा ॥ और गढ़ोई नदी नद शिव गढ़ पाल दरयाव। दौरि दौरि चहुँ ओरते मिलत आनि यह भाव ६२ ॥ रूपकातिशयोक्तिवर्णन दोहा ॥ ज्ञान करत उपमेयको जहँ केवल उपमान। रूपकातिशयोक्ति तहँ भूषण कहत सुजान ६३ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ बासवसे बिसरत बिक्रमकी कहा चली बिक्रम लखत बीर बखत बिलन्दके। जाके तेज बृंद शिवाजी नरिंद मसरंद माल मकरंद कुलचंद साहिनंदके॥ भूषण भनत जाके बैर बैर नैरनि में होत अचरज घर घर दुखदंदके। कनक लतानि इन्दु इन्दुनि मैं अरबिंद भरै अरिबिंदानितै बुन्द मकरंदके ६४॥ भेदकातिशयोक्तिवर्णन दोहा ॥ जहँ जहँ आनहिं भांतिके बरणै बात कछूक। भेदकातिशयोक्ति सो भूषण कहत अचूक ६५ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ श्रीनगर नयपाल जुमिलाके क्षितिपाल भेजत रसाल चोर गढ़ कुही बाजकी। मेवार ढूंढार मारवार औ बुंदेलखंड झारखंड बांधौ धनी चाकरी इलाजकी। भूषण जे पूरब पछाहँ नरनाहते वै ताकत पनाह दिल्लीपति सिरताजकी। जगतको जैतवार जीत्यो अवरंगजेब न्यारी

रीति भूतल निहारी शिवराजकी ६६ ॥ अक्रमातिशयोक्तिवर्णन दोहा ॥ जहाँ हेतु अरु काज मिलि होत एकही साथ। अक्रमातिशयोक्ति सो कहि भूषण कबिनाथ ६७ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ उद्धत अपार तुव दुंदुभीधुकार साथ लंघै पारावार बृन्द बैरी बालकनके। तेरे चतुरंग के तुरंगन के रंगे रज साथही उड़ात रज पुंज है परन के॥ दक्षिण के नाथ शिवराज तेरे हाथ चढ़ै धनुष के साथ गढ़ कोट दुर्जनके। भूषण असीसै तोहिं करत कसीसै पुनि बाणनके साथ छूटैं प्राण तुरकनके ६८ ॥ चंचलातिशयोक्तिवर्णन दोहा ॥ जहां हेतु चरचाहि मैं काज होत ततकाल। चंचलातिशयोक्ति सो भूषण कहत रसाल ६९ ॥ उदाहरण दोहा ॥ आयो आयो सुनतही शिवसरजा तुव नाउँ। बैरि नारि दृग जलनि सों बूड़ि जात अरिगाउँ ७० ॥ अत्यन्तातिशयोक्तिवर्णन दोहा ॥ जहां हेतुते प्रथमहीं प्रकट होतहै काज। अत्यंतातिशयोक्तिसो कहि भूषण कबिराज ७१ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ मंगन मनोरथ के दानि प्रथमहिं तोहिं कामतरु कामधेनु सो गनाइयतु है। याते तेरे गुण सब गाइको सकतु कबि बुधिअनुसार कछु-

हम गाइयतुहै॥ भूषणकहै यों साहितनय शिव-
राज निज बखत बढ़ाइ करि तोहिं ध्याइयतुहै।
दीनता को डारि औ अधीनता बिडारि दीह
दारिद को मारि तेरे द्वार आइयतुहै ७२॥ तथा
दोहा॥ कबि तरवर शिव सुयश सर सींचे अच-
रज मूल। सफल होत है प्रथमहीं पाछे प्रकटै
फूल ७३॥ सामान्यविशेषवर्णन दोहा॥ कहिबे जहँ
सामान्यहै कहै जहाँ जु बिशेष। सो सामान्य
बिशेषहै बरणत सुकबिअशेष ७४॥ उदाहरण दोहा॥
और नृपति भूषण कहै करै न सुगमौ आज।
साहि तनय शिवसुयशको करै कठिनऊ काज
७५॥ तुल्ययोग्यतावर्णन दोहा॥ तुल्ययोग्यता धरम
जहँ बर्णनको है एक। कहूँ अबर्णनको कहत
भूषण सुकबि बिबेक ७६॥ उदाहरण कवित्त॥ च-
ढ़त तुरंग चतुरंग साजि शिवराज चढ़त प्र-
ताप दिनकर अतिजंगमें। भूषणचढ़त मरहट्टनि
के चित्तचाव खड्ग खुलि चढ़तहै अरिनके अंग
में॥ भोसिलाके साथ गढ़कोट है चढ़त अरि
जोटहै चढ़त एक मेरु गिरिशृंग में। तुरकान
गण ब्योमजान है चढ़त बिना मन है चढ़त

भारी भुजनि भुवभर धस्यो सुभाग । भूषण अब निहचिंतहैं शेषनाग दिगनाग ७८ ॥ दीपकवर्णन दोहा ॥ बर्ण्य अबर्ण्यनको धरम जहँ बरणतहैएक। ताको दीपक कहत हैं भूषण सुकबि बिवेक ७९ ॥ उदाहरणसवैया ॥ कामिनि कंथसों यामिनि चन्द सों दामिनि पावस मेघ घटासों । कीरति दान सों सूरति ज्ञानसों प्रीतिबड़ी सनमान महासों॥ भूषण भूषणसों तरुनी नलिनी नव पूषण देव प्रभासों । जाहिर चारिहूं ओर जहान लसै हिंदवान खुमान शिवासों ८० ॥ आवृत्तदीपकवर्णन दोहा ॥ दीपक पदके अर्थ जहँ फिरि फिरि कहत बखान । आबृत दीपक कहत हैं भूषण कबिमत जान ८१ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ अटल रहे हैं दिग्ग अन्तनिके भूपधरि रैयतिको रूप निज देश पेश करिकै । राना रह्यो अटल बहानाधरि चाकरीको बाना तजि भूषण भनत गुण भरिकै। हाड़ा राठौरहे कच्छवाहे गोर और रहे अटल चकत्ताकीचमाऊ धरि डरि कै । अटल शिवा जी रह्यो दिल्लीको निदरि धीर धरि ऐड़ धरि तेग धरि गढ़ धरिकै ८२ ॥ तथा सवैया ॥ मद

जलद छबि साजई । भूमि धरन फणपति बिलसत अति तेज धरन ग्रीषम रबि छाजई ॥ खड्ग धरन शोभा तहँ राजत रुचि भूषण गुन धरन समाजई । दिल्लि दलन दक्षिण दिशि थम्भन ऐड़ धरन शिवराज बिराजई ८३ ॥ प्रतिवस्तूपमा वर्णन दोहा ॥ बाक्यनको युग होत जहँ एकै अर्थ समान। जुदो जुदो करि भाषिये प्रति वस्तूपमा जान ८४ ॥ उदाहरण सवैया ॥ देत तुरी गुनगीत सुने बिन देत करी गुन गीत सुनाये । भूषण भावत भूप न आन जहाँ न खुमानकी कीरति गाये ॥ मङ्गनको भुवपाल घने पै निहाल करै शिवराज रिझाये । और रितै बरसे सरसै पै बढ़ै नदिया नद पावस आये ८५ ॥ दृष्टांत वर्णन दोहा ॥ पदसमूह युग अर्थ जहँ प्रतिबिम्बित सो होत । ताहि कहत दृष्टांत है भूषण सुमति उदोत ८६ ॥ उदाहरण दोहा ॥ शिवा औरंगहि जिति सकै और न राजाराउ । हथ्थ मथ्थ पर सिंह बिनु और न घालै घाउ ८७॥ चाहत निर्गुण सगुणको ज्ञानवन्त गुण धीर। यही भांति निर्गुण गुणिहि शिवा निवाजत बीर ८८ ॥ निदर्शनावर्णन दोहा ॥ सदश बाक्य युग अरथ है

करिये एक अरोप। भूषण ताहि निदर्शना कहत बुद्धिदै ओप ८९ ॥ उदाहरण सवैया ॥ मच्छहु कच्छ में कोल नृसिंह में बावनमें भनि भूषण जो है। जो प्रशुराममें जो रघुराम में जोव कह्यो बलरामहुको है ॥ बौधमें जो अरु जो कलकी महँ बिक्रमहूबेको आगे सुनो है। साहस भूमि अधार सोई अब श्री सरजा शिवराज में सो है ९० ॥ तथा दोहा ॥ औरनिको जो जनमुहै सो जाको यक रोज। औरनिको जो राज सो शिव सरजा की मौज ९१ साहिन सों रनमांड़िकै कीन्हों सुकबि निहाल। शिव सरजा को ख्याल है औरनिको जंजाल ९२ ॥ व्यतिरेक वर्णन दोहा ॥ समछबि वाले दुहुँनिमैं जहँ बर्णत बाढ़ि एक। भूषण कबि कोबिद सकल ताहि कहत ब्यतिरेक ९३ ॥ उदाहरण छप्पै ॥ त्रिभुवन में परसिद्ध एकु अरि बलि वह खण्डिय। यहि अनेक अरिबल बिहंडि रण मण्डलमण्डिय॥ भूषण वह ऋतुएक पुहुमिपानिपहि बढ़ावत। यह छहुँ ऋतु निशि दिन अपार पानिय अधिकावत ॥ शिवराज साहि तुव सथ्थ नित लक्ख हथ्थि हय लक्ख दइ। यकहि गयंद यकहि तरंग किमि सुरेंद्र सरिवर करइ ९४

सहोक्तिवर्णन दोहा ॥ बस्तुनिको भाषत जहां जन रंजन सहभाय। तहां सहोक्ति कहत हैं कबिकोबिद समुदाय ९५॥ उदाहरण कवित्त ॥ छूटत उलास आम खास एकसंग छूटे हरम शरम एकरंग बिनु ढंगही। नैनके नीर छूटे या एक संग छूटे सुख मुख रुचि त्योंही बिनुरंगही॥ भूषण बखाने शिवराज मरदाने तेरे धांक बिललाने न गहत बल अंगही। दक्षिणके सूबा पाइ दिल्लीके अमीर तजे उत्तरकी आश जीव आश एक संगही ९६॥ बिनोक्तिवर्णन दोहा ॥ प्रस्तुत जहँ कछु बात बिन हेतु बर्यको होइ। ताहि कहत बिनोक्ति हैं भूषण कबि मत जोइ ९७॥ उदाहरण सवैया ॥ को कबिराज बिभूषण होत बिनाकबि साहि तनै को कहाये। को कबिराज समाजित होत सभा सरजाके बिनागुण गाये॥ को कबिराज भुवालनि भावतु भौंसिलाके मनमें बिन भाये। कोकबिराज चढ़ै गजराज शिवाजीकी मौज महीबिनु पाये ९८॥ तथा दोहा ॥ शोभामान परजग किये सरजा शिवा खुमान। साहिन सो बिन डर अगड़ बिन गुमान को दान ९९॥ समासोक्तिवर्णन दोहा ॥ बर्णन कीजे आन को ज्ञान आन को

होय। कहत समासोक्ति सो भनि भूषण सबकोय १०० ॥ उदाहरण दोहा ॥ बड़ो डील लखि पील को सबनि तज्यो बन थान। धनि सरजा तुव जगत में ताको हरयो गुमान १०१ तुही सांच द्विजराज है तेरी कला प्रमान। तो पर शिव किरपा करी जानों सकलजहान १०२ ॥ परिकर और परिकरांकुर वर्णन दोहा ॥ साभिप्राय बिशेषणनि भूषण परिकर जानि। साभिप्राय बिशेष तैं परिकरांकुर मानि १०३ ॥ उदाहरण कबित्त ॥ बचैं-गान समुहानैं बहलोलखां अयानैं भूषण बखानैं दिलआनि मेराचरजा। तुझते सवाई तेरा भाई सलहेर पासबन्दैं किया साथका न कोई बीर ग-रजा। साहिनको साहसी औरंगके लीन्हें गढ़ जिसका तू चाकर सो जिसकी है परजा। साहिका ललन अफजलका मलन दिल्लीदलका दलन शिवराज आया सरजा १०४॥ तथा दोहा ॥ शूराशिरो-मणि शूर कुल भूषण शिवमकरन्द। क्यों करिकै औरंगाजितै कुलमलेच्छ कुलचन्द १०५ भूषण भनि सबही तबहिं जीत्यो हो जुरिजंग। क्यों जीततु शिवराज सौं अब अधेक अवरंग १०६॥ श्लेषवर्णन दोहा ॥ एकबचनमें होतजहँ बहुअर्थनिको

ज्ञान। श्लेषकहत हैं ताहिको भूषण सकल सुजान १०७॥ उदाहरण कवित्त॥ सीतासंग सोहति लक्ष्मण सहायजाको भूप भरत नाम भाई नीति चारुहै। भूषण भनत कुल सूरकुलभूषणहै दाशरथी सबजाके भुजभुवभारु है॥ अरिलङ्क तोर जोरजाकेसाथबानरहैं सिंधुरहै बांधेजाके दलको न पारुहै। तेगहिकै भेंट जो न राकस मरद जान्यों सरजा शिवाजी रामहीको अवतारुहै १०८ देखत सरूपको सिहात न मिलन काज जग जीतिबे को जामें रीति छलबलकी। जाके पास आवै ताहि निधर करत बेगि भूषण भनत जाकी संगति न फलकी॥ कीरति कामिनी राच्यो सरजा शिवाको एक बसकै न बस करनी सकल की। चंचल बरस एक काहू पैन रहै दारी तिनुका समान सूबादारी दिल्ली दलकी १०९॥ अप्रस्तुतप्रशंसावर्णन दोहा॥ प्रस्तुति लीन्हें होइ जहँ अप्रस्तुत परशंस। अप्रस्तुत परशंस सो कहत सुकबि अवतंस ११०॥ उदाहरण दोहा॥ हिन्दुनि सों तुरकिनि कहै तुमको सदा संतोष। नाहिंन तिहारे पतिन पर शिवसरजा को रोष १११

आगितिय भिन्नभिन्न सों कहै ... [illegible]

शिवसरजा सो बैर नहिं सुखी तिहारे कंत ११२॥ पर्यायोक्तिवर्णन दोहा ॥ बचननकी रचना जहाँ बर्णनीय परजानि । पर्यायोक्ति कहत है भूषण ताहि बखानि ११३॥ उदाहरण कवित्त ॥ महाराज शिवराज तेरे बैर पेखियतु घन बन ह्वै रहे हरम हबसीनके । भूषण भनत तेरे बैर दामनगरज वार पर बाहबहे रुधिर नदीनके॥ सरजा समर्थ बीर तेरे बैर बीजापुर बैरी बैयरनिकर चीन्ह न चुरीन के। तेरे बैर देखियतु आगरे दिल्ली में बिनुसिन्दुरके बिन्दुमुख इन्दु जवनीनके ११४॥ व्याजस्तुतिवर्णन दोहा ॥ निन्दा में स्तुति कढ़त जहँ स्तुति में निन्दा होइ । व्याजस्तुति तासों कहत भूषणकबिसब कोइ ११५॥ उदाहरण कवित्त ॥ पीरी पीरी हुन्नै तुम देत हौ मँगाय हमैं सुबरणहमसों परखि करि लेतहौ। एकपलही में लाखैं रुखनि सों लेत लोग तुम राजा ह्वैकै लाखैं दीबेको सचेतहौ ॥ भूषण भनै यों महाराज शिवराज बड़े दानी दुनी ऊपर कहाये कौन हेतहौ। रीझि हँसि हाथी हम सब कोऊ देत कहा रीझकर हाथी एक तुमहीं तौ देत हौ ११६ तूतौ रात्योदिन जगजागत रहत ओऊ जागत रहत रात्यो दिन-

बनरत हैं। भूषण भनत तू बिराजै रज़ भस्यो ओऊ रज भरे देहनि दरी में बिचरत हैं॥ तूतौं शूरगण को बिदारि बिहरत सूर मंडलै बिदारि सुरलोक बिहरतहैं। काहेते शिवाजी गाजी तेरोई सुयश होत तोसों अरि बर सरि बर सी करत हैं ११७॥ आक्षेपवर्णन दोहा॥ पहिले कहिये बात कछु तासों पुनि प्रतिषेध। ताहि कहत आक्षेपहैं भूषण सुकबि सुमेध ११८॥ उदाहरण सवैया॥ जाइभिरौ न भिरै बचिहौ भनै भूषण भौंसिला भूपशिवासौं। जाइ दरी न दुरौ दबियो तजिकै दरिया उलँघौ लघुतासौं॥ सीछनकाज उजीरन को कढ़ै बोलयों आदिल साहि सभासौं। छूटि गयो तो गयो परनालो सलाहकी राहगहौसिरजा सौं ११९॥ विरोधवर्णन दोहा॥ द्रब्याक्रिया गुन मैं जहाँ उपजत काज बिरोध। तासों कहत बिरोध हैं भूषण सुकबि सुबोध १२०॥ उदाहरण सवैया॥ श्रीसरजा शिव तो जस सेत सो होतहै साहिन के मुखकारे। भूषण तेरे अरुन्नप्रताप सपेद लखे कुनरा नृपसारे॥ साहितनै मुखकोप आगिन्न सौं बैरी जरैं सब पानिपवारे। एक अचंभव होत बड़ो तिन ओठगहे अरिजात न जारे १२१॥

विरोधाभासवर्णन दोहा ॥ जहँ बिरोध सों जानिये सांच बिरोध न होइ । ताहि बिरोधाभास कहि बरणत हैं सब कोई १२२ ॥ उदाहरण सवैया ॥ दक्षिण नायक एक तुहीं भुव भामिनिको अनुकूल ह्वै भावै । दीनदयाल न तोसों दुनी अरु म्लेच्छ के दीनहि मारि मिटावै ॥ श्री शिवराज भनै कवि भूषण तेरे स्वरूपही कोउ न पावै । सूरके वंश मे सूर शिरोमणि ह्वै करि तू कुलचन्द्र कहावै १२३ ।

विभावनावर्णन दोहा ॥ भयो काज बिन हेतहूं बरणै हैं जिहि ठौर । तहँ बिभावना होति है भाषत कबिशिरमौर १२४ ॥ उदाहरण सवैया ॥ बीर बड़े बड़े मीर पठान खरो रजपूतनको गनु भारो । भूषण आइ तहां शिवराज लियोहरि औरंगजेब को गारो ॥ दीन्हों कुब्जाव दिलीपतिको अरु कीन्हों वजीरनको मुँह कारो । नायो न माथहि दक्षिण नाथ न साथमें सेन नहाथ हथ्यारो १२५ ॥

तथा दोहा ॥ साहितनय शिवराजकी सहज टेव यह ऐन । अनरीझे दारिद हरै अनखीझे अरि सैन १२६ ॥ द्वितीयविभावनावर्णन दोहा ॥ जहँ प्रगट भूषण भनत हेतु काजते होइ । सो बिभावना औरऊ कहत सयाने लोइ १२७ ॥ उदाहरण

दोहा ॥ शिवराज भूषण मन बढ़्यो श्री शिव-राज खुमान । तुव कृपान ध्रुव धूमते भयो प्रताप कृसान १२८ ॥ असम्भववर्णन दोहा ॥ अनहूबेकी बात कछु प्रकट भई सो जानि । जहां असंभव बरणिये सोई नाम बखानि १२९ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ जसन के रोज यों जलूस गहि बैठ्यो जोव इन्द्र आवै सोई लागै औरँगकी परजा । भूषण भनत तहँ गरज्यो शिवाजी गाजी जिनको तुजकु देखि कों न हिये लरजा ॥ ठान्यो न सलाम मान्यो साहिको इलाम धूम धाम कै न मान्यो रामसिंह हूको बरजा । जासों ऐंड़करे भूपबचै न दिगंत ताके दन्त तोरि तखत तरेते आयो सरजा १३० ॥ तथा दोहा ॥ औरँग यों पछिताय मन करतो यतन अनेक । शिवा लेइगो दुर्ग सब को जानै निशिएक १३१ ॥ असंगतिवर्णन दोहा ॥ हेतु अनतही होत जहँ काजु अनतही होइ । ताहि असंगति कहत हैं भूषण सुमति समोइ १३२॥ उदाहरण कवित्त ॥ महाराज शिवराज चढ़त तुरंग पर ग्रीवा जातनैकर गनीम अतिबल की। भूषण चलत सरजा की सैन भूमिपर छाती दरकाति खरी अखिल खलन की ॥ कियो

दौरि घाव अमीर उमराउ पर गई कटि नाक सगरेई दिल्ली दलकी । सूरति जराई कीन्हों दाहु पातसाहउर स्याही जाय सब पातसाही मुख झलकी १३३ ॥ विषमवर्णन दोहा ॥ कहाँबात यहकहाँ वह यों जब करत बखान ।ताहि बिषम भूषण कहत भूषण सुकबि सुजान १३४ ॥ उदाहरण सवैया ॥ जाबालि बार सिंगार पुरी औ जवारि को रामके नैरिको गाजी । भूषण भौंसिला भूपति ने सब मारि यों दूरि किये जिमि पाजी ॥ बैर कियो सरजासों खवासखां क्यों उरसैन बिजै-पुर बाजी । बापुरो आदिल साहि कहां कहां दिल्लीको दावनगीर शिवाजी १३५ लैपरन लौ शिवा सरजा करनाटकलौ सब देश बिगूचे । बैरिनके भगे बालक बृन्द भने कबि भूषण दूरि पहूँचे ॥ नांघत नांघत घोर घने बनहारि परे यों कटे मनो कूंचे । राजकुमार कहां सुकु-मार कहां बिकरार पहार वे ऊँचे १३६ ॥ सम-वर्णन दोहा ॥ जहां दुहूँ अनुरूप को करिये उचित बखान । सम भूषण तासों कहत भूषणसकल सुजान १३७॥ उदाहरण सवैया ॥पञ्ज हजारिनबीच खराकिय मैं उसका कछू भेद न पाया । भूषण

यों कहि औरँगजेब उजीरन सों सुहिसाबुरि-साया ॥ कम्मर की न कटारिदई इसलामने गोसलखान बचाया। जोर शिवा करता अनरथ्य भली हुइ हथ्य हथ्यार न आया १३८ ॥ दोहा ॥ कछु न भयो केतो ठयो हार्यो सकल सिपाह। भलीकरै शिवराजसों औरँगकरै सलाह १३९ ॥ विचित्र वर्णन दोहा ॥ जहां कहत हैं यतन फल चित्त चाहि बिपरीत। भूषण ताहि बिचित्र कहि बरणत सुकबि सुप्रीत १४० ॥ उदाहरण दोहा ॥ तेजै सिंहहि गढ़दये शिव सरजा यश हेत। लीन्हे कैयौ बरष में बार न लाई देत १४१ ॥ प्रहर्षण वर्णन दोहा ॥ जहँ मनबांछित अर्थते प्रापति कछु अधिकाइ। ताहि प्रहर्षण कहत हैं भूषण जे कबिराय १४२ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ साहितनय सरजाकी कीरति सो चारो ओर चांदनी बि-तान क्षिति छोर छाइयतु है। भूषण भनत ऐसो भूपति भौसिलाको है जाके द्वार भिक्षा सदाई भाइयतुहै॥ महादानी शिवाजी खुमानजी जहान पर दानके प्रमान जाके यों गनाइयतु है। रजतु की हौस किये हेम पाइयतु जासों हयनिकिहौस किये हाथी पाइयतुहै. १४३ ॥ विषादन वर्णन ॥ जहँ

चितु चाहे अरथको उपजे काज बिरुद्ध। ताहि बिषादन कहत हैं भूषण बुद्धि बिबुद्ध १४४॥ उदाहरण सवैया ॥ दाराहि मारि मुराद को बांधि कै संगरसाह सुजा बिचलाये। भूषण के बसि दिल्लिकि दौलत औरउ देशघने अपनाये॥ बैर कियो सरजा शिवसों यक औरँग के न भये मन भाये। फौज पठाइहुती गढ़लेनको गांठिहुकेगढ़ कोटगँवाये १४५॥ दोहा॥ महाराज शिवराज तुव बैरीतजिरसरुद्र। बचिबे को सागर तिरे बूड़ेशोक समुद्र १४६॥ अधिक वर्णन दोहा॥ जहां बड़े आधारते बरणत बढ़ि आधेय। ताहि अधिक भूषण कहत जानि सुगाह प्रमेय १४७॥ उदाहरण दोहा॥ शिवसरजा तुव हाथको नहिं बखान करि जान। जाको बासी सुयश सब त्रिभुवन में न समान १४८॥ अन्योन्य वर्णन दोहा॥ अन्योन्या उपकार जहँ यह बर्णन ठहराइ। ताहि अन्योन्या कहतहैं अलंकारकबिराइ १४९॥ उदाहरण सवैया॥ तो करसों क्षिति छाजत दान है दानहुसों अति तो कर छाजै। तैंहि गुणी कि बड़ाइ सजै अरु तेरि बड़ाई गुणी सबसाजै॥ भूषण तोहिं सों राज बिराजत राज सों तू शिवराज बिराजै। तो बल

सों गढ़ कोट गजै अरु तू गढ़ कोटनि के बल गाजै १५० ॥ विशेष वर्णन दोहा ॥ बरणतहैं आधेय को जहँ बिनहूँ आधार। ताहि विशेष बखानहीं भूषण कबि सरदार १५१ ॥ उदाहरण दोहा ॥ शिव सरजा सों जंग जुरि चन्द्रावत रजवन्त। राउ अमरगो अमरपुर समर रहो रजतन्त १५२ ॥ ब्याघात वर्णन दोहा ॥ और काज करता जहां करै औरई काज। ताहि कहत ब्याघातहैं भूषण कबि शिरताज १५३ ॥ उदाहरण सवैया ॥ ब्रह्मरचै पुरुषोत्तम पोषत शंकर सृष्टि सँहारनहारे। तू हरि को अवतार शिवानृपकाज सवाँरै सबै हरिवारे ॥ भूषण यों अवनी जवनी कहै कोउ कहै सरजासों हहारे। तू सबको प्रतिपालनहार बिचारे भतार न मारे हमारे १५४ ॥ गुंफ वर्णन दोहा ॥ पूरुब पूरुब हेतुकै उत्तर उत्तर हेत। या बिधि धारा बरण कबि गुंफ कहत बानेत १५५ ॥ उदाहरण सवैया ॥ शंकर की किरपा सरजापर जोर बढ़ी कबि भूषण गाई। ता किरपासों सुबुद्धि बढ़ी भुव भौंसिला साहि तनैकी सवाई ॥ राज सुबुद्धि सों दान बढ़यो अरु दान सों पुराय समूह सदाई। पुरायसों बाढ्यो शिवाजी खुमान खुमानसों बाढ़ि

जहान भलाई १५६ ॥ दोहा ॥ सुयश दान अरु दान धन धन उपजै किरवान । सो जग में जाहिर करी सरजा शिवा खुमान १५७ ॥ एकावली वर्णन दोहा ॥ प्रथम बरणि जहँ छोड़िये जहां अरथ की पांति । बरणत एकावलि अहै कबिभूषण यहि भांति १५८ ॥ उदाहरण हरिगीतछन्द ॥ तिहुँ भुवन में भूषण भनै नरलोक पुराय कि साज में । नरलोक में तीरथलसैं महितीरथों कि समाज में ॥ महिमा बड़ी महिमें भली महिमैं महारज लाजमें । रज लाज राजति आजु है महराज श्रीशिवराज में १५९ ॥ मालादीपक और सार वर्णन दोहा ॥ दीपक एकावलि मिले मालादीपक होइ । उत्तर उत्तर उतकरष सार कहत है सोइ १६० ॥ उदाहरण मालादीपकका कवित्त ॥ मन कबिभूषण को शिवकी भगति जीत्यो शिव की भगति जीती साधुजनसयानै । साधुजन जीते या कठिनकलिकाल कलिकालजीते महाबीर राजनि महिमानै ॥ जगतमें जीते महाबीर महाराजनि ते महाराज बावनहूँ पातसाहि लेवानै । पातसाहि बावनौ दिल्ली के पातसाहि दिल्ली पातसाहि हिन्दुपति पातसाहि शिवानै १६१ ॥ उदाहरण

सारका सवैया ॥ आदि बड़ी रचनाहै बिरंचि कि जामैं रह्यो रचि जीवजड़ो है। ता रचना में सुजीव बड़ो अति काहेते ताउर ज्ञान गड़ो है॥ जीवनि में नरलोक बड़ो कबि भूषण भाषत पैज अड़ो है। हैं नरलोक में राजबड़े सब राजनि में शिवराज बड़ो है १६२॥ यथासंख्य वर्णन दोहा ॥ क्रमसों कहि तितके अरथ क्रमसों बहुरि मिलाइ। यथासंख्य तासों कहत भूषण जे कबिराइ १६३॥ उदाहरण कवित्त ॥ जेई चहौ तेई गहौ सरजा शिवाजी देश सबै दले दुवनहते बड़े उरके। भूषण भनत भौंसिला सों अब सनमुख कोऊ ना लड़ैया है धरैया धीरधुरके॥ अफजल खानऊ सामैत मान फत्तेखान कूटेलूटे जूटे जे वजीर बीजापुर के। अमर सुजान मोहकम बहलोल खान खांड़े छांड़े डांड़े उमराय दिलीसुर के १६४॥ पर्यायवर्णन दोहा ॥ जहां अनेकनि में रहै आखिर ह्वै करि एक। ताहि कहत पर्यायहैं भूषण सुकबि बिबेक १६५॥ उदाहरण दोहा ॥ जीति रही अवरंग में सबै छत्रपति छांड़ि। तजि ताहू को अब रही शिवसरजा करमांड़ि १६६॥ कवित्त ॥ कोटगढ़ दैकै माल मलक मैं बीजापरी

गोलकुंडावारो पीछेहीको सरकतु है। भूषण भनत भौसिला भुवाल भुजबलरेवाहीके पार अवरंग हरकतु है॥ पेस कसे भेजत ईरान फिरंगान पति उनहूं को उर याकी धाक धरकतु है। साहि तनै शिवाजी खुमान या जहानपर कौने पातसाह के न हिये खरकतु है १६७॥ परिवृत्ति वर्णन दोहा॥ एकबात को दै जहां आन बातको लेत। ताहि कहत परिबृत्ति हैं भूषण सुकबि सुचेत १६८॥ उदाहरण कवित्त॥ दक्षिण बरन धीरधरन खुमानगढ़ लेतगढ़ धरनि सों धरमु दुवारु दै। साहि नरनाहको सपूत महाबाहु लेत मुलुक महान छीनि साहिन को मारु दै॥ संगरमें सरजा शिवाजी अरिसैननि को सारुहरिलेत हिंदुवान सरसारु दै। भूषण भौसिला जय यशके पहारलेत हरजू को हारु हरगन को अहार दै १६९॥ परिसंख्यावर्णन दोहा॥ अनत बरजि कछु बस्तुजहँ बरणत एकहि ठौर। ताहि कहत परिसंख्य हैं भूषण कबि दिलदौर १७०॥ उदाहरण कवित्त॥ अतिमतवारे जहां द्विरदै निहारियतु जहां तुरंगन मेंही चंचलाई परकीति है। भूषण भनत जहां परलगै बाननि में कोक पक्षिनिही

माहँ बिछुरन रीतिहै ॥ गुणगण चोर जहां एक चित्तही के लोक बन्धै जहँ एक सरजा की गुण प्रीति है। कंपु कदली में बैरुबृक्ष बदली में शिव राज अदली के राजमें यों राजनीति है १७१॥

विकल्प वर्णन दोहा ॥ कै यह कै वह कीजिये जहँ कहनाउति होइ। ताहि बिकल्प बखानहीं भूषण कबि सब कोइ १७२॥ उदाहरण सवैया ॥ मोरंगजाहु कि जाहु कुमाँउ शिरीनगरैहु कबित्त बनाये। बांधव जाहु कि जाहु अमेर कि जोधपुरै कि चितौरहि धाये ॥ जाहु कुतुब्ब कि ए दल पै कि दिलीशहुपै किमि जाहु बुलाये। भूषण गाइ फिरौ महिमें बनिहै चितचाह शिवाहि रिझाये १७३ ॥ देशनि देशनि नारि नरेशनि भूषण यों सिखदेहि दयासों। मंगन होमन दंत गहो तिन कन्त तुम्हैं है अनन्त महासों ॥ कोट गहौ कि गहौ बनओट कि फौज कि जोट सहौ प्रभुतासों। और करो किनकोट कराह सलाह बिना बचिहौ न शिवासों १७४॥ समाधि वर्णन दोहा ॥ और हेतु मिलि करि जहां होत सुकर अति काज। ताहि समाधि बखानहीं भूषण जे कबिराज १७५ ॥ उदाहरण सवैया ॥ बैरु कियो शिव

चाहतु हो तब लौं अरिबाह्यो कटार कठेठ्यो । ज्योंहि मलेच्छहि छोड़े नहीं सरजामन तापर रोसमें पैठ्यो ॥ भूषण क्यों अफजल्ल बचै अटपाउके सिंहको पाउँउमेठ्यो । बीछूके घाय धौंक्यों इधरक्कहै तौ लागि घाय धराधर बैठ्यो १७६ ॥ समुच्चयवर्णन दोहा ॥ एकबारगी भयो जहँ बहुत जानिको बन्ध । ताहि समुच्चय कहत है भूषण देखि प्रबन्ध १७७ ॥ उदाहरण सवैया ॥ मांगि पठायो शिवा कछुदेशु उजीर अजानानि बोल गहेना । दौरि लियो सरजा परनालौं यों भूषण जो दिन दोउ लगेना ॥ धांकसो खाक बिजैपुर भो मुख आइगो खान खवासके फेना । भैभर की करकी हरकी धरकी उर ये दिलसाहि किसेना १७८ ॥ दोहा ॥ बस्तु अनेकानिं को जहां बरणत एकहि ठौर । ताहि समुच्चय कहत हैं कोऊ कबि शिरमौर १७९ ॥ उदाहरण सवैया ॥ सुन्दरता गुरुता प्रभुता भनि भूषण होति है आदर जामें । सज्जनता औ दयालुता दीनता कोमलता झलके परजामें ॥ दान कृपानहुको करिबो करिबो अभैदानहु को बरजामें । साहिनसों रण टेक बिबेकहु सो गुण एक शिवा सरजामें १८०॥

प्रत्यनीकवर्णन दोहा ॥ जहां जोरावर शत्रुके पक्षी पै करै जोर। प्रत्यनीक तासों कहत भूषण बुद्धि अमोर १८१ ॥ उदाहरण सवैया ॥ त्वाजधरो शिवा जीसों लरो सब्र सैयद मीर पठान पठाइकै। भूषणावै गढ़कोट तिहारे यहां तुम क्यों भटतोरे रिसाइकै॥ हिन्दुनकी पतिसों न बसाति सतावत हिन्दु गरीबन आइकै। लीजे कलंकन दिल्लिके बालम आलम आलमगीर कहाइकै १८२॥

अर्थापत्तिवर्णन दोहा ॥ वह जीत्यो तौ यह कहा यों कहनावति होइ। अर्थापत्ति बखानहीं ताहि सयाने लोइ १८३ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ शयनमें साहिनको सुन्दरी सिखावैं ऐसे सरजासों बैर जनि करौ महाबली है। पैसकसे भेजत बिलाइति परत काल सुनिके जिहाजनिहै करनाटथलीहै ॥ भूषण भनत गढ़कोट मालमुलुक दै शिवासों सलाह राखिये तो बातभलीहै। जाहि देत दण्ड तुम डरिकै अखण्ड सोई दिल्लीदल मली तो तिहारी महाचलीहै १८४ ॥ काव्यलिंग वर्णन दोहा ॥ हे दृढ़ाइबेजो अरथ ताको करत दृढ़ाउ। काव्यलिंग तासों कहत भूषण जे कबि राउ १८५ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ साडर्नितै जीतिगे

बिलाइतिको साहकीजै बलक बिलाइतिके बन्दि अरडावरे । भूषण भनत कीजै उत्तरी भुवालवश पूरबको लीजिये रसाल गजडावरे ॥ दक्षिणके नाहसों सिपाह निज बैरु करि अवरंगसाहजू कहाइये न बावरे । कैसे शिवा मनुगढ़ देत अवरंगै गढ़ गाढ़ेगढ़ पतीगढ़ लीन्हे और रावरे १८६ ॥ अर्थान्तरन्यासवर्णन दोहा ॥ कह्यो अरथ ताही लिये वहइ अरथ जहँ होइ । अर्थान्तरन्याससो भूषण कहि सब कोइ १८७ ॥ उदाहरण सवैया ॥ साह तनय सरजा समरत्थ करी करनी धरनी पर नीकी । भूलिगे भोजसे बिक्रम से औ भई बलि बैन कि कीरति फीकी ॥ भूषण भिक्षुक भूपभये भलि भीखलै केवल भौसिलाही की । नेकाके रीझ धनेश करे लखि ऐसिये रीति सदा शिवजीकी १८८ ॥ प्रौढ़ोक्ति वर्णन दोहा ॥ जहँ उत करष अहेतुको बरणतहैं करिहेत । प्रौढ़ोक्ति तासों कहत भूषण कबि विरदेत १८९ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ मानसरवासी हंसबसन समान होत चन्दन सों घस्यो घन सारोन घरीकहै । नारद की शारद की हाँसी में कहाँसी सम शरद की सुरसरी कौन पुंडरीकहै ॥ भूषण भनत छक्यो

क्षीरधि में वोह लेत फैन लपटानो ऐरावतको करी कहै। कैलास में ईश ईश शीश रजनीश यहौ अवनीश शिवाके न यशको शरीकहै १६०॥ संभावनावर्णन दोहा ॥ जो यों होइ तौ होइयों यह संभावना होइ। ताहि कहत संभावना भूषण कबि सब कोइ १६१॥ उदाहरण कवित्त ॥ लोमसकी ऐसी आयुहोइ कौनऊ उपाउ तापर कवच जो करन वारो धरिये । तापर जो हूजिये सहस बाहु तापर सहस गुन साहस जो भीमहूंते करिये ॥ भूषण कहै यों अवरंग जूसों उमराउ नाहक कहौ तो जाय दक्षिण में मरिये । चलैना कछू इलाज भेजियतु वेहीकाजु ऐसी होइ साजु तो शिवासों जाइ लरिये १६२ ॥ मिथ्याध्यवसिति वर्णन दोहा ॥ झूठ अर्थकी सिद्धिको झूठोबरणात आन । मिथ्याध्यवसिति ताहिको भूषण कहत सुजान १६३ ॥ उदाहरण दोहा ॥ पगरन में चल यों लसै ज्यों अंगद पग ऐन । ध्रुव सों ध्रुव सों मेरु सों शिवसरजा को बैन १६४ ॥ उल्लासवर्णन दोहा ॥ एकहिके गुण दोषसे औरे के गुण दोष। बरणातहैं उल्लास सो सकल सुकबि करि तोष १६५ ॥ उदाहरण सवैया ॥ काजमही शिवराज बली हिन्दवान बढाइबे को

उरऊटै । भूषण भू निरम्लेच्छ करी चहै म्लेच्छनि मारिबे को रण कूटै ॥ हिन्दु बचाइ बचाए रही अमरेश चन्दावतलौं कोउ टूटै । चन्द अलोकति लोक सुखी यहि कोक अभाग जो शोक न छूटै १९६ ॥ दोषेण गुणोयथा कवित्त ॥ देश दह बट्ट कीन्हें लूटिकै खजाने लीन्हे बचन गढ़ोइ कछु गढ़ शिर-ताज के । तोरादार सकल तिहारे मन सबदार डांड़े जिनके सुभाय जगदेवजाजके॥ भूषण भनत पातसाहिको यों लोग सब बचन सिखावत सला-हकी इलाजके। डावरे की बुद्धि ह्वैकै बावरे न कीजै बैरु रावरे के बैरु होत काज शिवराजके १९७ ॥ गुणेनगुणोयथा दोहा ॥ नृप सभा में आपनी चहत बड़ाई काज । साह तनय शिवराजके करत क-वित कबिराज १९८ ॥ दोषेणदोषोयथा दोहा ॥ शिव सरजाके बैरको यह फल आलमगीर । छूटे तेरे गढ़ सबै कूटेगए उजीर १९९ ॥ अवज्ञावर्णन दोहा ॥ औरे के गुणदोष ते औरके गुण दोष । जहां अवज्ञा ताहि सों कहत सुकबि मति पोष २०० ॥ उदाहरण सवैया ॥ औरनि के अन गाढ़े कहा अरु बाढ़े कहा नहिं होत चहा है । औरनि के अनरीझे कहा अरु रीझे कहा न

मिटाव तहाहै ॥ भूषण श्रीशिवराजहि मांगिये एक महीपर दानि महाहै। मांगन औरनि के दरबार गए तौ कहा न गये तौ कहाहै २०१॥ अनुज्ञावर्णन दोहा॥ जहां सरस गुण देखिकै करै दोष को हौस। ताहि अनुज्ञा कहत हैं भूषण कवि इहिरौस २०२॥ उदाहरण कवित्त ॥ जाहिर जहांन सुनि सुनि दानके बखान महादानि साहतनै गरीबनिवाज के। भूषण जवाहिर जलूसजर वाफ जोति देखि शिवसरजाकी सुकबिसमाज के। तप करि करि कमलापति सों मांगत यों लोग सब करि मनोरथ ऐसी साजके॥ बैपारी जहाज के न राजाभारी राजके भिखारी हमैं कीजे महाराज शिवराजके २०३॥ लेशवर्णन दोहा॥ जहँ बरणत गुण दोषकै कहे दोष गुणरूप। भूषण ताको लेश कहि गावत हैं कबिभूप २०४॥ उदाहरण दोहा ॥ उदैभान राठौर गौ धीरजु गढ़ धरिऐंड। प्रगटै फल ताको लह्यो परिगो सुरपुर पैंड २०५॥ कोऊ बचत न सामुहे सरजासों रणसाजि। भलि कीन्ही पिय समरते जीव लै आएभाजि २०६॥ तद्गुणवर्णन दोहा ॥ जहां आपनोरंग तजि गहै और को रंग। ताको तद्गुण

कहतहैं भूषण बुद्धिउतंग २०७॥ उदाहरण कवित्त ॥ पंपा मानसर आदि अगन तलावलागे जिनकी परनि मैं अकथ यूथगथके । भूषण यों साज्यो राइगढ़ शिवराज रहै देवचकि ताहिकै बनाइ राजपथके ॥ बिनबल अबल ककान आसमान मैं हौं लेत शिवराज जहां इन्दु औउडुहथके। महल उतंग मणि ज्योतिनकेसंग आनिकैयो रंग चकहा गहत रबिरथके २०८ ॥ पूर्वरूपवर्णन दोहा ॥ प्रथम रूप मिटिजात जहँ फेरि वैसई होत। भूषण पूरबरूप सो कहत ताहि कबिगोत २०९॥ उदाहरण सवैया ॥ ब्रह्मके आननते निकसी ते अत्यंत पुनीत तिहूं पुर मानी। राम युधिष्ठिर के बर में बलमीकहुँ ब्यासके संग सुहानी । भूषण यों कबिके कबिराजनि राजनिके गुणपाय निसानी॥ पुण्य चरित्र शिवासरजै बरन्हाय पवित्र भई बर बानी २१०॥ यों शिरको छहरावत छार है जाते उठै असमान बघूरे। भूषण भूधरऊधर के जिन के धुनि धक्कनियों बलरूरे॥ ते सरजा शिवराज दिये कबिराजनिको गजराज गरूरे । शुंडनिसों पहिले जिन शोखिकै फेरि महामदसों नदपूरे २११॥ श्रीसरजासल हेरिकैयुद्धघनेउमरावनके

घर घाले। कुम्भ चन्द्रावत सैद पठान कबंधनि धावत भूधर हाले॥ भूषणयों शिवराज कि धाक भये पियरे अरुणे रँगवाले। लोहैं कटे लपटे अति लोहु भये मुँह मीरनके पुनिलाले २१२॥ यों कबिभूषण भाषतुहै यकतो पहिले कलिकाल कि सैली। तापर हिन्दुनकी सब राह सुऔरँग साहकरी अति मैली॥ साहतनै शिवके डरसों तुरको गहि बारि धिकी दिशि पैली। वेदपुराणन कीं चरचा अरचा द्विज देवन की पुनि फैली २१३॥ अतद्गुणवर्णन दोहा॥ जहँ संगतिमें और को गुण कछु बैनहि लेत। ताहि अतद्गुण कहत हैं भूषण सुकबि सुचेत २१४॥ उदाहरण सवैया॥ दीनदयाल दुनी प्रति पालक जे करता निरम्लेच्छ मही के। भूषण भूधरि उद्धरि-बो सुनै और जिते गुनके सब जीके॥ या कलि में अवतार लियो तउते शिवराज सुभाव बली के। आइधस्यो हरितै नररूप पै काज करै सि-गरे हरिही के २१५॥ दोहा॥ शिवसरजा की जगतमें राजति कीरति नौल। अरि तिय दृग अंजन हरै तऊ धौलकी धौल २१६॥ कवित्त॥ साहनन्द सरजा शिवा के सनमुखआइ कोऊ बचि

जाइ न गनीस भुजबल में। भूषण भनत भौसिला की दल दौर सुनि आकही मरत म्लेच्छ औरंगके दल में॥ रात्यो दिन रोवतिरहाति जवनीहैं शोगु परयोई रहत दिल्ली आगरेसकल में। कज्जलकलित असुवानिके उमँग संग दूनोहोत रंग जमुनाके मिलि जलमें २१७॥ मीलितवर्णन दोहा॥ सदृश बस्तुमें मिलि जहां होत न नेकु लखाइ। मीलित तासों कहतहैं भूषण जे कबिराइ २१८॥ उदाहरण कवित्त॥ इन्द्रनिज हेरत फिरत गजइन्द्र अरु इन्द्रको अनुज हेरै दुग्धधिनदीशको। भूषण भनत सुरसरिताको हंसहेरैबिधिहेरै हंसको चकोररजनीशको॥ साहतने शिवराज करनी करीहै तैंजु होत है अचंभौ देव कोटियों तेंतीसको। पावत न हेरे तेरे यशमें हेराने निज गिरिको गिरीश हेरे गिरिजा गिरीशको २१९॥ उन्मीलितवर्णन दोहा॥ सदृश बस्तु में मिलेपुनि जानत कौनहु हेत। उन्मीलित तासों कहत भूषण सुकबि सुचेत २२०॥ उदाहरण दोहा॥ शिवसरजा तुव सुयश में मिले धौल छबितूल। बोल बासते जानियतु हंसचमेली फूल २२१॥ सामान्यवर्णन दोहा॥ भिन्नरूप जहँ सदृश में भेदु न जान्यो जाइ। ताहि कहत सामान्य हैं भूषण

कवि समुदाइ २२२ ॥ उदाहरण सवैया ॥ पावस की इकराति भली न महाबली सिंह शिवागमकेते। म्लेच्छ हजारनि ही मरिगे दशही मरहट्टनिके झमके ते ॥ भूषण हालि उठे गढ़ भूमि पठान कवंधनिके धमकेते। मीरनिके अवसानगए मिलि धोपनि सों चपला चमकेते २२३ ॥ विशेषकवर्णन दोहा ॥ भिन्नरूप जहँ सदृश में लहिये कछुक बिशेख। ताहि बिशेषक कहतहैं भूषण सुमति उलेख २२४ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ अहमदनगर के थान किरवान लैकै नव शेरी खान सों खुमान भिर्यो बलतें। प्यादेन सों प्यादे पखरैतनि सों पखरैत बखतरवारे बखतरवारे हलतें ॥ भूषण भनत एते मान घमसान भयो जान्यो ना परतु कौन आयो कौन दलतें। सम बेष ताके तहाँ सरजा शिवाकेबांके बीर जाने हांके देत मीरजाने चलतें २२५ ॥ पिहित वर्णन दोहा ॥ पर के मन की जानि गति ताको देत जनाइ। कछू क्रिया करि कहतहैं पिहित ताहि कबिराइ २२६ ॥ उदाहरण दोहा ॥ गैरि मिसिल ठाढ़े शिवा अन्तर्यामी नाम। प्रगट करी रिस साह को सरजा करिन सलाम २२७॥ आनि मिल्यो अरि यों गह्यो

घखानि चकत्ता चाउ। साहतनय सरजा शिवा दियो मुच्छपर ताउ २२८॥ प्रश्नोत्तर वर्णन दोहा ॥ कोऊ पूछै बात कछु कोऊ उत्तर देत। प्रश्नोत्तर तासों कहत भूषण बुद्धि निकेत २२९॥ उदाहरण सवैया ॥ लोगनिसों भनि भूषण यों कहै खान खवास कहा सिख दैहौ। आवत देख निकेत शिवासरजा मिलिहौ भिरिहौ कि भगैहौ॥ आदिलकी सभा बोलिउठी यों सलाहकरौ व कहौ भजिजैहौ। लीन्हो कहा लरिकै अफजल्ल कहा लरिकै तुमहूं अब लैहौ २३०॥ दोहा ॥ को दाता को नर बड़ो को जग पालनहार। कबि भूषण उत्तर दियो शिव नृप हरि अवतार २३१॥ व्याजोक्ति वर्णन दोहा ॥ आन हेतसों आपनो जहां छपावत रूप। व्याजउक्ति तासों कहत भूषण सब कबिभूप २३२॥ उदाहरण सवैया ॥ साहनके उमराव जितेक शिवा सरजा सब लूटिलये हैं। भूषणते बिन दौलति ह्वैकै फकीर ह्वै देश बिदेश गये हैं॥ लोग कहैं तुम्हैं दक्षिणजेइ सिसोदिया रावरे हाल ठये हैं। देत रिसाइकै उत्तर यों हमहीं दुनियाते उदास भये हैं २३३॥ दोहा ॥ शिवा बैर औरँग बदन लगीरहै नित आहि।

कबि भूषण बूझै सदा कहै देत दुख साहि २३४॥

लोकोक्ति वा छेकोक्ति वर्णन दोहा ॥ कहनावति जो लोक की लोकउक्ति सो जानि। जहाँ कहत उपमान हैं छेकउक्ति सो मानि २३५॥ लोकोक्ति उदाहरण दोहा॥ शिवसरजाकी सुधि करौ भली न कीन्ही पीव। सूबाह्वै दक्षिण चले धरेजात कहँ जीव २३६॥

छेकोक्ति उदाहरण दोहा॥ जे सुहात शिवराज को वे कवित्त रसमूल। जे परमेश्वर को चढ़ैं तेई आछे फूल २३७॥ वक्रोक्ति वर्णन दोहा॥ जहँ श्लेष के काकुसों अरथ लगावै और। वक्रउक्ति तासों कहत भूषणकबि शिरमौर २३८॥ उदाहरण कवित्त॥

साहतनै तेरे बैरु बैरिनको कौतुक सो बूझत फिरत कहौ काहेरहे तचिहौ। सरजाके डरहम आये इतै भाजि तौ वसिंह सोई यहि याही ठौरते उकचिहौ॥ भूषण भनत वै कहै कै हम शिव कहै तुम चतुराई सों कहत बात रचिहौ। शिव जापै रूठो तो निपट कठिनाई तुम बैर त्रिपुरारिके त्रिलोकमें न बचिहौ २३९॥ दोहा॥

कर मुहीम आये कहे हजरति मन सब दैन। शिवसरजासों जंगजुरि ऐहै बचिकै हैन २४०॥

स्वभावोक्ति वर्णन दोहा ॥ साँचो त्योंहीं बरणिये जैसो

जाति स्वभाव। ताहि स्वभावोक्ति कहैं भूषण जे कबिराव २४१ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ दान समै द्विज देखि मेरुहू कुबेरहूकी संपति लुटाइबे को लख्यो ललकतु है। साहके सपूत शिवसाहिके बदनपर शिवकी कथनि में सनेह झलकतु है॥ भूषण जहान हिन्दवानिके उबारिबे को तुरकानि मारिबे को बीर बलकतु है। साहिन सों लरिबेकी चरचा चलति आनि सरजाके दृगनि उछाह छलकतु है २४२ ॥ काहू के कहे सुनेते जाही ओर चाहे ताही ओर इकटक घरी चारिक चहत हैं। भूषण भनत बात कहेते कहत खात कहेते पियत ऊँची सांसनि जहत हैं॥ पौढ़े हैं तौ पौढ़े बैठे बैठे खरे खरे हमको हैं कहां करत यों ज्ञान न गहत हैं। साहि के सपूत शिव साहि तेरे बैर ऐसे साहि सब रात्यो दिन शोचत रहत हैं २४३ ॥ भाविक वर्णन दोहा ॥ भयो होनहारो अरथ बरणत जहँ परतच्छ। ताको भाविक कहत हैं भूषण कबि मति स्वच्छ २४४ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ अजों भूतनाथ मुण्डमाल लेत हरषत भूतनि अ-हार लेत अजहूं उछाह है। भूषण भनत अजों काटे कर बाखनि के कारे कुंजरानि-परी कठिन

कराह है ॥ सिंह शिवराज सल्हेर के समीप ऐसो कीन्हों कतलान दिल्ली दलको सिपाह है। नदी रणमण्डल रुहेलनि रुधिर अजों अजों रवि मण्डल रुहेलनि की राह है २४५ ॥ गज घटा उमड़ें महाघन घटासी घोर भूतल सकल मद जल सों पटतु है। भूषण बढ़त भौंसिला भुआलकों यों तेज जेतो सब बारहौ तरनि में बढ़तु है ॥ बेला छाड़ि उछलत सातो नीर निधि मन मुदित महेश नहिं नाचतु लहतु है। शिवा जी खुमान दल दौरत जहान पर आनि तुरकानिपर प्रलौ प्रगटतु है २४६ ॥ भाविकछवि वर्णन दोहा ॥ जहँ दूरास्थित बस्तुको देखत बरणत कोइ। भूषण भूषण राज यह भाविक छबि सो होइ २४७ ॥ उदाहरण सवैया ॥ सूबनि साजि पठावतहै निज फौज लखै मरहट्टनि केरी। औरँग आपनि दुर्गजमाति बिलोकति तेरहि फौज दरेरी ॥ साहितनै शिवसाहि भई भनै भूषण यों तुव धांक घनेरी। रातिहुँ द्योस दिलीशनके तुव सेन कि सूरति सूरति घेरी २४८ ॥ उदात्त वर्णन दोहा ॥ अति सम्पति बरणत जहां तासों कहत उदात्त। कै ... [illegible]

आन की बात २४६ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ द्वारानि मतंग दीसै अङ्गनै तुरंगहीसै बन्दीजन धारण असीसै यशरत हैं। भूषण बखानै जरबाफ के सम्याने ताने झालरिन मोतिनके झुण्ड झुलरतहैं ॥ महाराज शिवा के निवाजे कविराज ऐसे साजि के समाज तिहि ठौर बिहरत हैं। लाल करै प्रात जहां नीलमणि करै राति इहि भांति सरजा की चरचा करत हैं २५० ॥ दोहा ॥ या पूना में मति टिकौ खान बहादुर आइ । ह्यांई साइस्त खानको दीन्ही शिवा सजाइ २५१ ॥ अत्युक्ति वर्णन दोहा ॥ जहां शूरतादिकन की अति अधिकाई होइ। ताहि कहत अत्युक्ति हैं भूषण जे कबि लोइ॥ २५२॥ उदाहरण कवित्त ॥ साहतनै शिवराज ऐसे देत गजराज जिन्हैं पाइ होत कबिराज बेफिकिरि हैं। झूमति झलझलाति झूलै जरवाफिनकी जकरे जंजीर जोर करत किरिरि हैं॥ भूषण भवँर भननात घननात घंट पग झननात मनो घन रहे घिरि हैं । जिनकी गरज सुनि दिग्गज बेआब होत मदहीके आब गरगाप होते गिरि हैं २५३ ॥ आज यहि समै महाराज शिवराजे

तुहीं जगदेव जनक ययाति अंबरीकसों। भूषण भनत तेरेदान जलनिधिमहँ गुनिनको दारिद् गयो बहि खरीकसों॥ चन्द्रकर किंजलक चांदनी पराग उडु बृन्द मकरन्द बुन्द पुंजको सरीकसों। कुंद्सम कयलास नाक गंगनाल तेरे यश पुण्डरीकको अकाश चंचरीकसों २५४॥

दोहा॥ महाराज शिवराज के जेते सहजस्वभाइ। औरानिको अति उक्तिसे भूषण कहत बनाइ २५५॥ निरुक्तिवर्णन दोहा॥ नामनिको निज बुद्धिसों कहिये बात बनाइ। तासों कहत निरुक्तिहैं भूषण जे कबिराइ २५६॥ उदाहरण दोहा॥ कबिगणको दारिद् दुरद याही दल्यो अमान। याते श्रीशिवराजको सरजा कहत जहान २५७॥

हेतुवर्णन दोहा॥ या निमित्त यहई भयो यों जहँ वर्णन होइ। भूषणहेतु बखानहीं सकल सयाने लोइ २५८॥ उदाहरण कवित्त॥ दारुण सुदैत्य हिरनाकुश बिदारबेको भयो नरसिंहरूप तेजू बिकरार है। भूषण भनत त्योंही रावणके मारिबेको रामचंद्र भयो रघुकुल सरदार है॥ कंसके कुटिलबल बंशनि बिदारिबेको भयो यदुराइ बसुदेवको कूमार है। पृथ्वी पुरुहूत साहि के सपत

शिवराज म्लेच्छनि के मारिबेको तेरो अवतार है २५९ ॥ अनुमानवर्णन दोहा ॥ जहां काजते हेतुकै जहां हेतुते काज । जानिपरत अनुमानसों कहि भूषण कबिराज २६० ॥ उदाहरण कवित्त ॥ चित्त अनचैन आंसू उमगत नैन देखि बीबी कहै बैन मियां कहियतु काहिनै । भूषण भनत बूझे आये दरबार ते कँपत बारबार क्यों सँभारत न नाहिनै ॥ सीनो धक धकतु पसीनो आयो देह सब हीनोभयो रूप न चितौत बामे दाहिनै । शिवाजूकी शंकमान गयेहो सुखाइ तुम्हैं जानियतु दक्षिण को सूबाकर्यो साहिनै २६१ ॥ छेकऔरलाटानुप्रासवर्णन दोहा ॥ स्वर समेत अक्षर कि पद आवत सदृश प्रकास । भिन्न अभिन्ननि पदनि को छेकलाटानुप्रास २६२ ॥ छेकाउदाहरण छप्पै ॥ दिल्लिय दलनि गँजाइ करि शिवसरजा निरशंक । लूटिलियो सूरति शहर बंकक्करि अति डंक ॥ बंकक्करि अतिडंकक्करिअस शंकक्कुलिखल । सोच्च चकित भरोच्च चलिय विमोच्च चखजल ॥ तट्टइ मन कट्टटिक सोइ रट्टदिल्लिय । सद्दहिशि दिशि मद्दहाबिभंइ रद्दहिल्लिय २६३ ॥ गतबलखान दलेलहू बखत्त

बहादुर मुद्ध। शिवसरजा सलहेरि ढिग क्रुद्धद्धरि कियजुद्ध ॥ क्रुद्धद्धरि कियजुद्धद्धरि अरिअद्ध-द्धरिकरि । मुण्डड्डरि तहँ रुण्डड्डकरत्त डुंडड्डुग भरि ॥ खेदिद्दर वर छेदिद्दयकरि मेदद्दधि दल। जंगग्गति सुनिरंगग्गलि अवरंगग्गत बल २६४ ॥ मुण्डकटत कहुँ रुण्डनटत कहुँ शुण्ड पटतघन। गिद्धलसत कहुँ सिद्ध हँसत सुखवृद्ध रसतमन ॥ भूतफिरत करिबूत भिरत सुरदूत घिरत तहँ । चंडि नचति गनमंडि रचति धुनि डण्डि मचति जहँ ॥ इमि ठानि घोर घमसान अति भूषण तेजु कियो अटल। शिवराज साहि सुवखग्ग बलदलि अडोल बहलोलदल २६५ ॥ तथा कवित्त ॥ बेहर बरार बाघ बांदर बिलार बिग बगरे बराह जानवरनिके जोम हैं। भूषण भनत भारे भालुक भयानक हैं भीतर भवन भरे लील-गऊ लोमहैं ॥ पैडायल गजगन गैंड़ा गररात गन गोहनि में गोहनि गरूरगहे गोम हैं। शि-वाजी की धांकमिले खलकुल खाकबसे खलनके खेरनि खवीसनके खोम हैं २६६ ॥ लाटानुप्रासका उदाहरण कवित्त ॥ तुरमती तहँ खाने तीतुर गुसल खाने मकर [illegible]

हुरमखाने सिंहहैं शुतरखाने पीलखाने पाडी हैं करंजखाने कीश हैं ॥ भूषण शिवाजी गाजी खग्गसों खपाये खलखाने खलनि के खेरेभये खीश हैं। खडजी खजाने खरगोश खिलवतखाने खीसें खोलै खसखाने खांसत खबीशहैं २६७॥

तथा दोहा ॥ औरनिके याँचे कहा नहिं याँच्यो शिवराज। औरनिके याँचे कहा जो याँच्यो शिवराज २६८ ॥ जमकवर्णन दोहा ॥ भिन्न अर्थ फिरि फिरि जहां वेई अक्षर बृन्द। आवतहैं सो जमक कहि बरणत बुद्धि बिलन्द २६९ ॥ उदाहरण कवित्त॥ पूनावारी सुनिकै अमीरनिकी गतिलई भाजिबे का मीरनि समीरनिकी गतिहै। मार्यो जुरि जंग यशवन्त यशवन्त जाके संगकेता रजपूत रजपूतपतिहै॥ भूषण भनै यों कुलि भूषण सिवैला शिवराज तोहिं दीनी शिवराज बरकतिहै। नौहू खण्ड दीप भूप भूतलके दीपआजु समैके दिलीप दिलीपतिको सीदतिहै २७० ॥ पुनरुक्तवदाभासवर्णन दोहा॥ भासतही पुनरुक्तसों नहिं निदान पुनरुक्त। पुनरुक्त वदाभाससो भूषण बर्णत युक्त २७१॥

उदाहरण कवित्त॥ अरिन के दलसैन संगर में समुहाने टक टक ... ... है ... ... में । ...

बार पूरो महानद परवाह पूरो बढ़त है हाथिन के मदजलदान मैं ॥ भूषण भनत महाबाहु भौंसिला भुवाल सूररवि समतेजु तीखन कृपान मैं। भाल मकरन्द कुलचन्द कलानिधि तेरो सरजा शिवाजी जसु जगत जहान मैं २७२ ॥

कामधेनु चित्रवर्णन दोहा ॥ लखे सुने अचरज बढ़ै रचना होइ बिचित्र । कामधेनु आदिक घने भूषण बरणत चित्र २७३ ॥ उदाहरण सवैया ॥ ध्रुव जो गुरुता तिनको सुरभूषण दानि बड़ो गिरिजा पिव है । हुवसो हरितारिन को तरु भूषणदानि बड़ो सरजा शिवहै ॥ भुवको भरता दिनको नर भूषण दानि बड़ो वरजा शिव है । तुव जो करता इनको अरु भूषण दानि बड़ो वरजा निव है २७४ ॥ संकर वर्णन दोहा ॥ भूषण एक कवित्त मैं भूषण होत अनेक । संकर तासों कहत हैं जिन्हैं कबित की टेक २७५ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ ऐसे वाजिराज देत महाराज शिवराज भूषण जे बाजकी समाजै निदरत है । पौनपाइ हीन दृग घूंघट मैं लीन मीनजल मैं बिलीनक्यों बराबरी करत है ॥ सबते चलाक चित्त तेऊ कुलिआलम के रहै उरअन्तर ते धीर न धरत

है । जिनचढ़ि आगे को चलाय तुरी तीर तीर एक भरि तेऊ तीर पीछही परत है २७६ ॥

ग्रंथ सूचीवर्णन दोहा ॥ उपमा अनन्वय कीह बहुरि उपमा प्रतीप प्रतीप । बरणतसा उपमेयोपमा मालोपमा कबि दीप १ ललितोपमा रूपक बहुरि परिनाम पुनि उल्लेख । स्मृति भ्रांति अरु संदेह कह अपह्नुति शुभबेख २ हेतुपह्नुति बहुरि पर्जस्त पह्नुति मानि । भ्रांत पूर्व अपह्नुत्यो छेका अपह्नुति जानि ३ कैतवापह्नुति मनो उत्प्रेक्षा सुबखानि । रूपकातिशयोक्तिभेदकातिशयोक्ति बखानि ४ अक्रमातिशयोक्ति चंचलातिशयोक्ति सुलेख । अत्यंतातिशयोक्ति पुनि पढ़िये सामान्य बिशेख ५ तुल्यजोगदीपका वृत्तदीप प्रति बस्तु मा दृष्टांत । सुनि दर्शना व्यतिरेक पनि सह उक्ति बरनतसंत ६ बिनोक्ति बहु समासोक्ति सुपरि करौ अहबंस । परिकरांकुरत्यों श्लेष अप्रस्तुत परसंस ७ परजा उकति गनाइये व्याजस्तुति आक्षेप । बिरोध बिरोधाभास है बिभावना सुख खेप ८ बिशेषोक्ति असम्भवो बहुरयो असंगति लेखि । विषम सम सुबिचित्र प्रहरषन [illegible]

अन्योन्य विशेषव्याघात परस्परचारु । गुंफ एकावली मालादीपक बर्णत सारु १० ॥ यथासंख्य बखानिये पर्जाय पुनिपरिवृत्ति । परिसंख्य कहत बिकल्पहैं जिनके सुमति संपत्ति ११ बहुर्यो समाधि समुच्चयौ अरु प्रत्यनीक बखानि । कहत अर्थापत्ति कबिजन काव्यलिंग सुजानि १२ अरु अर्थ अंतर न्यास भूषण प्रौढ़ उक्ति गनाइ । संभावना मिथ्याध्यवसिति पुनि उलासहिगाइ १३ अवज्ञा अनुज्ञालेस तन्दुन पूर्वरूप उरेखि । बहुर्यो अतन्दुन अनगुनौ मीलित उन्मीलित लेखि १४ सामान्यरु बिशेष पिहितो प्रश्न उत्तर जानि । पुनि ब्याज उक्तिरुलोक उक्तिरु छेक उक्ति बखानि १५ बक्र उक्ति स्वभाव उक्ति सुभाविकौ निरधारि । भाविक छबि अरु उदात अत्युक्ति बहुरि बिचारि १६ बरने निरुक्तिरु हेतु अनुमानौ छेक अनुप्रास । भूषण भनत पुनि जमकगनि पुन रुक्तबद आभास १७ चित्र सङ्कर एकसै भूषण कहे अरु पांच । सुनतही ग्रन्थनि मतै जिन्हैं सुकबि मानै सांच १८ ॥ ग्रन्थरचनाकाल वर्णन दोहा ॥

सुमसत्रह सैंतीसपर शुचि बदि तेरस भान ।

संबत (१७३०) भूषण शिवभूषण कियो पढ़ियो सूनौ सुजान १ उपसंहार कवित्त ॥ एक प्रभुताको धाम सजे तीनों बेद काम रहैं पंचानन षड़ानन राजी सर्वदा। सातौ बार आठौ याम याचक निवाजे नौ औतार थिर राजै कृपान त्यों हरि गदा ॥ शिवराजभूषण अटलरहै तौलौं जौलौं त्रिदश भुवन सब गंग और नर्मदा। साहि तनै साहसीक भौंसिला सूरजबंश दाशरथिराज तौलौं सरजा थिर सदा १ ॥

इति शिवराजभूषणभूषणकविकृत सम्पूर्णम् ॥

दोहा ॥ परमानन्द अनन्द मन रहत सदा दिन रैन। भूषण काव्य प्रकाश किय रसिकनको सुखदैन १ सम्बत उन्निस पचासमें पूसशुक्लरबि वार। सातै शुभदिन शुद्धकर ग्रंथ भयो तइयार २ सकल सुकबिबिनती सुनहु कहत दोउ कर जोर। काव्यरीतिजानतनहीं लघुमतिमति अतिमोर ३ यथा उचित यह शुद्धकिय अपनीमति अनुसार। भूलचूक जो होय कछु कबिजनलेहिं सुधार ४॥

आपका कृपाभिलषी ग्रन्थसंग्रहकर्त्ता
परमानन्द वल्द बंगालीलाल सुहाने
जबलपूर, मध्यप्रदेश